

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४८०/५०९६०००

ग्रंथ नाम कृष्ण का विषय

विषय कृष्ण पुराण

प्रालिहन, मुंबई

Project of the
Rajawade Sanskrut Mandal, Dhule and the Yashwantrao
Pralihan, Mumbai

(1)

॥ अथ तत्त्वियस्तवक्त्रामः ॥ श्वरमासेनमः ॥



"Joint project of the Rajawant Bhanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishthan, Mumbai"

(2)

श्रीगणेशायमः॥ श्रीसरस्वत्यैनमः॥ श्रीयुलसोनमः॥ श्रीकृष्णपरमामेनमः॥ ॥ श्रीराम
 अनमोनिनारोयणा॥ तुंविजगतिपरियुरा॥ शृद्धबूढास्त्वयुणा॥ तुविदवा॥ ॥ तुकार्यकारणजि
 कत्ता॥ तुसोग्भोजनश्राणिदान॥ निर्गुणयुरा॒उपयनां॥ तुविदवा॥ ॥ तुंसत्रिदानंदघन तुंप्रवये
 काब्जिनिर्वण॥ त्रियुणयुणामाजिकांचन॥ तुंविजसिंहा॥ ॥ जयजयाजिपरमपुरुषा॥ महासागा
 परमहंसा॥ हृदयकमजिविजांशा॥ तुंविशासा॥ जयजया॒तुंश्राणा॥ तुंश्राण्यकार्यकुरा॥ तुं
 परासरपरवरा॥ ओतिलिंगा॥ ॥ युग्मद्वास्त्वयुणा॥ तुद्युक्तनासुक्षमवनु॥ गंधरूपनारम्भुप
 रमहंसा॥ ॥ जयजयाजिजगद्वासा॥ जयजयाजिविजांशा॥ वाल
 मुकुद्वातुं॥ जयजयपाजिजानहृषा॥ जगद्वासा॒पहाद्विषा॥ धर्मकर्मसवतापा॒वैग्वातुं॥ जय
 जयाजिजोतिलिंगा॥ परमपुरामहासुगा॥ महिकभक्तप्रनासा॥ सहश्रमोजितुं॥ जियंजया
 जियेवका॥ जयजयाजिश्रीश्राणन्ता॥ परमपुरापरमार्था॥ नृहस्तितुं॥ १०॥ याताश्रसोहस्तुति उट

(2A)

तुमिवच्चेसकिति॥ जैसेअर्थदिलेनिधि॥ तिथोदकोवें॥ १७ कहनधानाविष्वि॥ कणराशिषुजेहेत्रि
 नैसलबनकुसेवरिति॥ गमिलेमजा॥ १८ नरिहवितुमाविनयलि॥ जानप्रकाशोवेंतःकरणि॥ ग्रंथ
 पदाविकरणि॥ कराविमज॥ १९ जैसात्रंधारागविडेवरस॥ नातरिसुत्रधारियासोरसैसा
 बोलविनवरस॥ ग्रंथराजहा॥ धेदवाकुमाहोपकृपावस्तु॥ उपिंपलिकाउलंघिसागह॥ आणिमउप
 काउलंघिलागिरिवहू॥ साथासेकेंद्रा॥ २० मांगलात्रादित्यत्वका॥ आतावितियस्तवकाविआउन्मेल
 कथाकिलातहूमधोद्रा॥ बोलविमज॥ २१ तुमयना॥ वियसंगति॥ पुजापाविजेमीमंदभति॥ जैसे
 देवहारिमानिति॥ वृषक्षोत्ते॥ २२ मानरिकन् कावरक॥ सवेपुजापोवेलाख॥ जैसाजडलोमिरंक॥
 तुमेवरणि॥ पगकृपाआलिश्चनंता॥ प्रसन्नजाजीरथंथार्थ॥ जैगेसुरेकथा॥ सधतापायि॥ २३ मग
 नमिलागलेषु॥ जौसकबनिदेवाप्रकाषु॥ कमबमोदकथंकुदु॥ फरव्रावक्तुंतो॥ २४ आतानुसु
 सरस्वति॥ ब्रह्मतनयाआदिशक्ति॥ हंसवाहानविलाहाति॥ सत्स्वरिते॥ २५ जैसकलनवसला

(3)

क० स० ३

२

त्रौदाविधाविश्वादिकवा ॥ ग्रंथसुसक्तमन्मावा ॥ करमंडिनेजे ॥ ४ ॥ यातानमिलिक्कन्देवता ॥
 स्मानसोरएकामाता ॥ ग्रंथवक्तमवौषा ॥ त्रिष्टुवमंडित ॥ ५ ॥ यातानमुत्तोवैग्रंथायन जो
 अहंदिशानायन ॥ जेणेसुरिकेलविश्वजल ॥ नामामृते ॥ ६ ॥ यातानमुक्तविवालिकि विजेष
 कोनशतस्ताकि ॥ शैवकोटिकोदुकि ॥ लिरापक्षा ॥ ७ ॥ यातानमुसत्त्रोतां ॥ जयाहरिक्षय
 स्ता विश्ववस्था ॥ नयामामृतिविश्वसका ॥ आणिसमैरी ॥ ८ ॥ तुम्भिधावैश्ववधान ॥ मन्मोलिता
 हरिकिर्तन ॥ जेणेनिवतिश्ववण ॥ वैस्ववेति ॥ ९ ॥ नावोरुणकथाकल्लतरु ॥ जोधर्मराशिनाम
 हामेल ॥ जेयेपदप्रवंधिमनोहरु ॥ याहट ॥ १० ॥ जेयेसर्वपुराणिचेसार ॥ जेसियुक्तगमि
 विपंचधार ॥ कादधिमयुनियापवित्र ॥ शृद्वजेस ॥ ११ ॥ नानादिपित्रेयमोलिक ॥ रत्नकोटिवरि
 कांचनाचिटिक ॥ काकर्त्तिपदिपदक ॥ सदैवजैसा ॥ १२ ॥ नानामुष्मानाशमोहु ॥ प्रसिकोपेक्ष
 विसमधु ॥ कांपृष्ठीमयुनियाकंडु ॥ कनकजैस ॥ १३ ॥ तेसालाकथाकल्लतरु ॥ नावियाएुकि

१४

(3A)

लासुमनहारु॥ सकियरिमवामधुक्तु॥ श्रीरंगतेये ॥ ३॥ शानाथसोहवामीपति जेमे
 जपराजासारति॥ आलिवेशं पायन धर्मभुति॥ वासुदिष्टतो ॥ ३॥ योदोहिचासंवादु तोवा
 लेनपुण्यतिंथु॥ जोसवनिश्चिपुर्णदु ॥ ग्रामाकुसुपश्वल्की ॥ ३॥ ॥ ३॥ श्रीकथा
 कल्पनिलियेसवकेमगायनराम ॥ ३॥ श्रीकृष्णपत्नु॥
 श्रीगणेशायनमः॥ मगल्योजन्मेत्तिडवाजिसंदेहो॥ गोकुलिश्वतर
 लावाखुदेवो॥ केदिपापगि॥ थकेतिकोविवरक्रिडा॥ कोणराखिलकोलाघिलेला
 डा॥ तोकृष्णश्वतरधुडा॥ संगिजेमग॥ आलिवराकाजालासावधा॥ आलिके
 विवेशयतिमाछ॥ गदानकगोपाळ॥ लाघलिकेंवि॥ ३॥ आलिश्रीवच्छ्वलाउन केस
 नजाइलेतेविनु॥ आलिपितांवरधसन् कैचैगोविहासि॥ ६॥ आलिलोगसहस्रसुं
 दरा॥ आलिआठिप्रणिकासुदरा॥ हसांगवेसुनेश्वरा॥ विस्तारनियां॥ ७॥ आलितेगठ

(६)

क० स० ३

३

उवहन केसेला पलेंग षशयन। निकरोवंजिशान॥ सकल्पिकमन। हि मगत्येण वेंगाय
 न॥ वरण कलगा प्रमा॥ जे रोंसुरि होय प्रवैष्टवेंगि॥ सरिहैत्यसारमहितव॥ पा
 नेकदाटलिगास्पाव॥ मगधेनुवेंद्रेवाजपा॥ गलित॥ वेणिपावलिव्रुमस्वन॥ ब्र
 वत्यपावीनविवन॥ तुझशालियगशरण॥ वरण विदव॥ पानकावेन प्रोर॥ रात्य
 जासननिधरि॥ देत्यशाणिलभोडिलं प्राप्ति॥ हिजावि॥ १७ मगत्येण वलुरानन॥ शिर
 सागरिअसनागयण॥ यावाचुरयास नगण॥ दाकिलकवण॥ १८ आत्मिंविनउलस्मि
 पवि॥ तवत्कुपोपेवसूमति॥ अलंकारोवेसि॥ रावति सूरि॥ १९ मगत्यालिवसंध
 रा॥ आणिदेवगेलश्वरसागरा॥ तव ओसयागनिद्वा॥ माविंदासि॥ २० मगब्रत्याकरि
 स्कनि॥ जयनयानिकमकापनि॥ तुजवसोनियांहिलि॥ मावलिदुःख॥ २१ जयनया
 जिशाषशयन॥ परियुलविगुलनिधान॥ अजरायमरानिगुणा॥ नारायणातुं २२॥

राम
३

(4A)

जयज्यानिप्रसाददानि॥ महापातकेंद्राटिलिमेदिनि॥ रमानवगजरलनतक्षणि॥ तुज
 वाचोनियं॥ १६३ क्षेत्रावपापृथीनामारा खुल्लियावानिश्चवतार॥ धर्मस्थापावानिधौर
 विप्रवनि॥ १७४ लक्ष्मिगगनवाणि॥ हृषीश्चायतनगोवेदेदिनि॥ तवभियेरनतनक्षणि॥ प्रू
 मंडब्लासि॥ १८५ वृंदेलियसेषुटारा॥ युणानमथरमिश्चवतारा॥ वृंदावनिरेवतोदेष्पारा॥
 केऽनुजाणा॥ १९६ गोधशित्येत्रासांध॥ तंश्चापवापरमस्मित्र॥ तुजवाचोनियाश्चवतार
 नेयेवमज॥ २०७ देवकिवसुदेवाच्यादृदरि॥ तुवाचोवेसदश्रिगिरि॥ नेदयेत्रादेवाच्यापरि॥ अ
 सावसुवा॥ २१८॥ तुजेगलियामापोग॥ तुवानिधिगिरि॥ यमुनेनदिनेनविरि॥ रेवतावपा
 प्रगमसुक्वेत्तिश॥ वसुदवेक्षवापुण्यस्तुक्ति॥ जयत्तिवातुंश्चादिपुरुष॥ वाल्कहोसि २२
 ऐसेकायत्तयचिसुकुल॥ जेत्तुतयोवश्चापय॥ नेसांगोवेसमस्त॥ मनपनि॥ २३ आणि
 नेनदयेत्रादा॥ कायपुण्यक्लेगोनिदा॥ जेत्यावियश्चाविसेधा॥ उपजलितुज २४

(५)

क० स० ३
४

मग्नेनारोयणु जिहेनाखपंसमनु निवर्तमानिकाव्रात्मणा स्वतपानोवे ॥ हियात्रा
 लणाविकुटंविनि ॥ पयोखिनोवेभृगनथनि ॥ तीलापुत्राकारणविनवणि ॥ केलिलतो
 रा ॥ २६ ॥ नक्षणप्राणश्वल ॥ पुरायाविनेक्षमहा प्रसन्नकरोनियांडरिहरु मागे
 पुत्रफब ॥ २७ ॥ मग्निकरिश्चउषान ॥ आधे मुरगेकरिधृम्रपान ॥ आलिस अवलोपमोन
 धरिलेतोग ॥ २८ ॥ नयाविलिपपस्थि ॥ तित्रासतिशाणिमोनि ॥ सहश्रवरेषदोनि ॥
 ब्रह्मनये ॥ २९ ॥ एसिजापोनतापसं माया ॥ सिल्केनिल्लरेसे ॥ हपहाउनियासेवैजो जा
 लोप्रसन्न ॥ ३० ॥ मग्निवोलिलिहावि ॥ नमारेखापुत्रकावारंगणि ॥ पावतिविनियाश्रि
 तःकरणि ॥ दुजेकेवे ॥ ३१ ॥ मग्निवोलिल्लागासहश्रिगिरि ॥ निनजन्मपञ्चउदूरि ॥ म
 गधाउलिपुटारि ॥ रुद्रेवशि ॥ ३२ ॥ मग्नेनोन्मेजयो ॥ यविलिवागर्षसावा ॥ तो
 फेउवानिसंदेहो ॥ मासियमनिका ॥ ३३ ॥ हाहश्रवतारश्रवतरल्लाश्रापण ॥ यानतिन

राम
४

(5A)

अवतारकोणकोण ॥ तेंकरीवंजिसान ॥ वैशंपायन ॥ ३६ ॥ मगद्योवैशंपायन ॥ राष्ट्रादुम
 हानिक्षण ॥ निरिषुसिलेपुसिवाप्रभा व्येकआत्म ॥ ३७ ॥ वामआणि सुसूत ॥ निसरादेवकि
 वागोपिनाथ ॥ प्रपितानामिदशारथ ॥ तोदेवमापठलिना ॥ ३८ ॥ तोहोकारियाचागिरिं ॥
 वामवरणदेउनिश्चलिं ॥ उसाच्छेष्वस्यां ॥ रुद्रोविशि ॥ ३९ ॥ मगप्रसन्नजलाहरिन
 हु ॥ लेणोमस्तकिरेनिलाअमयंकसं ॥ तोकामपञ्चदिलिनिर्धनि ॥ जाणउषा ॥ ४० ॥ तोहावल
 व देकीं ॥ याच्युएषसहश्रमुरिं ॥ ॥ यगाधय्येते ॥ ४१ ॥ येशोदाआणिनंद
 यासित्येषुर्वसमंध ॥ तोसहश्रमुरेक्तुवात् ॥ तकर्खेमज ॥ ४२ ॥ द्वोणतोवस्तु तोमहा
 शिक्षनापस्तु ॥ लेणोमांडिलाउहेषु ॥ मासियेषटिचा ॥ ४३ ॥ याच्यिप्रणिकसंहरा तियना
 ववोलिजेधारा ॥ तिवियेतपावियाधारा ॥ विणवेमज ॥ ४४ ॥ लयोवेदरेनियाकह मगमि
 जान्मोप्रकट ॥ भागेमायमिसंतुष्ट ॥ जाहाज्ञद्रोण ॥ ४५ ॥ मगद्वाणआणिधारा वसा

(6)

क० स० २

वैलिलिभूरा॥ जेषु त्रयोरं शारं गधरा॥ असोवपरि॥ क्षत्रियो रातो नंदु॥ धारो पशोदा
 नेवधू॥ एमा हापुर्वस मंथू॥ सांगितलाशोपा॥ क्षमगल्पणे जन्मेजयो॥ कोणकोहिलवसु
 देवो॥ नुकोहिलरावो॥ कोणकाणसा॥ क्षमापियो देव किनिनंदनि॥ देव किनोवभृगनयनि
 नेवसुदवासिकापिनि॥ कृष्णभाता॥ क्षमगल्पणे क्षमाश्रवा॥ सामवंशिचानृष्टवल्लयासुरसे
 नवाकृमहा विसूद्दवतो॥ क्षमाआगिक प्रकाशिता॥ किंसकाक्षने भित्तित्रवननाक् दृष्टि
 लदेयनाकृमहा रन्मानता॥ ब्रह्मोऽप्यसन वास्तवनंदु॥ परिदेव कित्तित्रापित्तवधू रात्रस
 पुर्वस मंथू॥ सादरकेता॥ क्षमगल्पणे कृष्ण॥ लोजालिउपवरि॥ लेमविलिनावरि वे
 मूदेवासि॥ क्षमान्मपाहोनियाप्रकृति॥ कृष्णाउक जालिसमस्त॥ मगवाघवितवरात॥ केस
 जाहलाधूरकति॥ अवेगिकमितापंथ॥ वहिणीपंथुजामात॥ तवगगनित्राहयकल्जीत
 जालागगनवालिता॥ क्षमावाजो श्राद्धागसी॥ तोदुसाकरित्तिरुदेव॥ जेसाकृमवर्मणि

राम

(6A)

केमानंग॥ करियाश्च॥ एसिजालिगैनवाणि॥ तेकंसेषेकिलेश्वलिं॥ मगत्पलेहवहिलि
 विषेकायकालि॥ द्वियातुलियेप्राणवेहिलि॥ तेरोयेविचारोवेसस्य॥ वित्तेवेनोवेसमत्ते पु
 त्रदारा॥ षष्ठिरिहेवालिलिगगनवाणि॥ हनुमासियाहितानिजननि॥ आतावधुवहि
 लि देवकिलि॥ वेष्यणोनकाटिलेद्यगीर्णशाब्॥ विषवल्लिचकारुसुब्॥ जवंशावेनाहिल
 ि॥ दृष्टसावानं॥ १९ सववस्त्रेदेवआवानोकवलि॥ कंसाएकेशाधमसुरिनिति कमरेना.
 हेतवकल्पोति॥ नदक्षेजाण॥ द्विजेग॥ परित्वित्तेश्वरिरा॥ तेचवतलेसमय पुर्वकमनि
 यंकृता मोडिकवरा॥ द्विभायाविणद्विविष्य॥ दहतरिपंचसूत॥ त्रिविधिताकायेहि
 ता॥ असतुसें॥ द्विश्वालिअसातवत्राविनाश॥ देहभावहाअभास॥ परिवहिणविधिता
 दोश॥ ठेनितितुवाद्विश्वालिअसातवत्राविनाश॥ प्रतिकवावाणविमोरि॥ एताविनार
 ऋषेष्वरिं विलिलाअसें॥ द्विश्वापरीतोनमनिउत्तरा विधुपाहेवकिशिर॥ मगवालिश्वा

गंभिर॥ वस्तुहेषतोऽहि कं सारासरातयुवति॥ गर्भदैर्जन्मुसाहाति॥ हमासिमारति॥ सयजाए
 तेमान्तेकं सासुरा॥ सापेनलिवधूवरा॥ मगआलामंदिरा॥ कं सासुरतो॥ ५३॥ तेप्रथाका
 जाणविलेसमय॥ मगवंदिशावेधाडिलेवधवल॥ ऐसालालाविचार॥ गगनवालिचा॥ ५४॥ ते
 रातोनियाकावेबा॥ मगआउवावधावावल॥ एताकेलावावल॥ गगनवालिचा॥ ५५॥ रे
 शिकरितात्तिंतवणि॥ तवंआलानारदमुनि॥ पुजाकरोनियांआसनि॥ वैसविलारये॥ ५६॥
 मगतोसकुबृतांत॥ नारदातिकलाष्टा॥ ताहातिनलाब्रस्मूल॥ ऐसानियां॥ ५७॥ को
 एपासुनकोणआउ॥ हेत्वतानेरविभिर्॥ कैसेवायावेअरिष्ट॥ गगनवालिचे॥ ५८॥ रे
 साकरोनियाअतुवाद॥ मगतोनियालानारद॥ एष्टमांडिलाप्रवंध॥ प्रधानवर्ण॥ ५९॥ लव
 जालेगर्भाधारण॥ हेवकिपसवलिसांगतिनन॥ तवधावतआलाआपण॥ कं सरावो॥ ६०॥
 पाहेत्वदेवेषुत्रु॥ युणहाविहोयेमासाश्रात्रु॥ मगआपदिलाकूमल॥ मेदिनिति॥ ६१॥

(7A)

तववसुदेवशाणीदवक्षि॥ उदनकरितिश्चयोमुत्तिं॥ कोणादोपानापातकिं हंडिलोशालिं
 कोणाजिवशरण॥ जोहनिवारिविम्॥ कायेशावरलोहाना॥ उस्त्रेकर्गी द्वे जैसेवन
 गम्भेशामरा॥ येउनजातिलक्षरा॥ मगलकरितमेष्टोरा॥ दुःखजैसे॥ ७॥ नानरिपाक्षिणी
 चेवाककावाक्कधरितिश्चक्रा॥ मुखपसंगतियाकदुःस॥ करिजननि॥ ८॥ आना
 असोहेपुनरागत॥ असेविवधिलेसप्रितात् प्राप्तधगासत्य॥ गिलपाताक्षालि॥ ९॥
 ऐसेवधिलेष्टमासी॥ जनकरितिउद्देश॥ उदनकरुलेशमोष॥ केतासुरासि॥ १०॥ नेणया
 विभरलिसामयि॥ भगवाषानेत्यरण॥ ११॥ तुंकाश्रवतरोवेउदरिं हेयकिञ्चा॥ १२॥ मग
 नोमहश्चक्षणि॥ गर्भिर्संवरलातलक्षणि॥ तोरवतिरमणसुकुटभलि॥ बिलिसद्वाण
 श्रान्ताश्रसोजन्मेजय॥ दविवोल्लविलिश्रादिमाया॥ सूमिजाउनलवलायां करोवेव
 काज॥ १३॥ गर्भासरलेष्टमास॥ मायुलनिकेसेनिरविलियास॥ नुमचिकिटतिसापा

सा अलकामि ॥४७॥ देवकिना उदरी ॥ अवतरना सह श्रगिरि तोषात्ताना उदरी हि लि
 चा ॥५८॥ श्राणि दुंबा उपजो वेजद विषो कुलिये गोदे बाधरि ॥ किंसमारिना अंतरि जावेसुं
 वा ॥५९॥ मगमुनिमणेया वरि विगिं निषालिते वरि ॥ श्रालिसमयरात्रि देवकिपासि
 अवेदेवकित्रै सनिद सुरि ॥ नवगस्त्रिला सुदरा ॥ तोषात्ताना उदरीं रोहिलिचा ॥६०॥
 वरोहिणी असेविस्मित ॥ पतिदेवकित्रै यस्त्रिला ॥ इर्षवक्त्तापरिश्राणित नहेसा
 कहि ॥६१॥ देवकिकरिन सेत्रोक्त ॥ केसांताप श्रादिपुरुषा उदस्त्रिनेसावाक्त
 केसासुसें ॥६२॥ नवकोसेएक्तिलट्टै तद्धा ॥ जे इर्षवक्त्तासुंदरो कोसमोविसवे तव
 सानवागर्सा ॥६३॥ मगयेजो देवा उदरी ॥ श्रापणात्तिरेवरि ॥ तवहरिश्रालेउदरि
 देवकिच्छा ॥६४॥ भासहश्रासुविशोसा तेसिदेवकिनेदेखिलिप्रसा ॥ वसुदेवादाउनि
 यांगसा ॥ प्रवेशलहरि ॥६५॥ ऐसाप्रवशलाहरि देवत्तवितिअंवरि पुष्पवरपूर्वं

(8A)

तराविं मेषउपमा ॥८॥ प्रगवस्तुदेव आणिदेव किं ॥ यालि परम संतोषि मागिलागर्ता
 नाशोकदुःखि ॥ विसरलिंति ॥ धमगउपजलाच्यानंद ॥ नवेटदोषाचारेवद ॥ जाणोकुरु
 लातेवदा पातकना ॥ ९॥ प्रगरंदाहिकरामस ॥ खुनिकरितिश्रंतरगत ॥ येणोपसंगे
 भुतिमंत ॥ देसोब्रस्म ॥ १०॥ प्रगजात्पुर्वादिवत ॥ मार्त्तिसरलेनवभास ॥ प्रगप्रसुतेवेष
 बदुवस ॥ दावलिदेव किं ॥ ११॥ प्रगआपणवद श्रहसि ॥ बुधवार आणिरोहिणि ॥ मेष
 वेष्टरजनि ॥ अधगिलि ॥ १२॥ नवेटदेव किं पञ्चलिनिदा ॥ आंगवेळपोरेषरयतं नव
 अन्नजल्लाशारंगधरा ॥ नेनलिजेत् ॥ १३॥ नवेटदेव किं जालिजागत ॥ नवेटदेव क्षा
 पस ॥ प्रगवस्तुदेवात्मियुत ॥ हारवविले ॥ १४॥ जववस्तुदेवभाहाविदृष्टि ॥ नवशायुधेस
 हितपञ्चगाति ॥ कमवनयनभुगुदिं दिव्यांशा ॥ १५॥ मेषवणश्रींगकांति ॥ किंदनि
 आविदिसिमुति ॥ मणिपदकाचिदिसि ॥ हृष्टयावति ॥ १६॥ यालिं वितावरभावगाठ

(१)

क० स० ३

ब्रह्मनास्तिरुपकं यिकमङ्गनपनभुयदिं द्विभगोसा॥५॥ विस्तेवाजात्ताकृमहूर्विभास्त्रानि
 स्त्रै॥ तवश्चाऽवलादुत्तमागत्ता पुण्यसार्वा॥ प्रियात्तापरलकंसकाव॥ हाहिमास्त्रिप
 मंवाव॥ तवबोलिल्लागोपाव॥ नस्तेवासि॥ द्विगोकुञ्जिनंदाचेषरि॥ जन्मलिमायोरेव
 गित्तेश्चाणाविसुद्दरि॥ कुमारिल्प॥ ६॥ द्विपासि वित्तानकरि॥ मगमनघालिंयावालुदरि
 मंदिरि॥ तेश्चाणाविकृमारि॥ कंद्वारुद्वा॥ ७॥ द्विपारुदिडागासिए॥ उसुदधार्वल्लु
 दुसरुत्रमिनारोयेण॥ सप्तजारण॥ ८॥ तवश्चालसुदवर॥ ब्रह्मादिकसमय॥ शाश्वत्त
 वित्तेजाले उसपकर॥ बोहुनिया॥ ९॥ तद्वारा गतिस्त्रिति॥ जयन्यालिकमवापनि॥ शुणा
 निरुणांसवाभूति॥ आपकरु॥ १०॥ द्विसद्विहानंदपन॥ जन्मिवरानामरण॥ यकविजनिका
 रण॥ प्रविष्टकाक्षिये॥ ११॥ जेतिउर्णनामिविहारि॥ लिक्केग्रासिआणिपसरि॥ तैसालुणा
 श्रीहरि॥ मूर्तिमंल॥ १२॥ उसेपउदर्शन॥ येकेउकेनेमहापुण्य॥ परिषक्तिरुपेत्रवतरण

राम
६

(9A)

केलेदुर्वां ॥१॥ सिगसानं होवेषरि ॥ रामप्रसवलिसुंदरि ॥ सामासानाश्र्यंतरि ॥ धारुयाकृस ॥
 तुमविदानं दनिवांत ॥ परिउणीनिसवंत ॥ महूद्धिअनंत ॥ ब्रह्मवावकतुं ॥२॥ तुं निवनोवेंजि
 वन ॥ तुं सानोवेंविशान ॥ मूमोक्षोवेंमोक्षसान ॥ ब्रह्मवावकतुं ॥३॥ मगजालिपुष्पवृष्टिदेव
 गैलनिजपिधिं ॥ वाघलागलिवैकुंडिं ॥ तर्पवेवि ॥४॥ वसुदेवविरालि ॥ जियेनवेरोहिलि
 लेवदिलप्रणिकरालि ॥ निंदत्वेषरि ॥५॥ भद्राचार ॥ हवेदत्ता ॥ जिमज्ञालगोपिनाथा ॥६॥ दिल
 एकापुरायकथा ॥ यणेकृस्यात्तकज्ञा ॥७॥ इति ॥ श्रीकथाकलनरुवितियस्त्रवक्तु
 जन्मकथननामदिनियोध्यापः ॥८॥ नामापणमस्तु ॥९॥ श्रीरस्तु ॥१०॥ श्रीराम
 श्रीगणेशायेनमः ॥ श्रीरामवरद ॥ तवेसंयश्रवशरि ॥ मायाजन्मलिकृमारि ॥ ब्रह्मनंदानि
 येषरि ॥ उदरियेशोदिआ ॥ एतवंदेवकिकरिभाहाय ॥ तवेदोम्लावावाव ॥ वसुदेवेषत
 नांगापाजा ॥ भावयांतैषे ॥११॥ साकृनियापद्मकृजि ॥ श्राकंगुणहृदयकमर्वि ॥ तुजरा

सोरमहा काहि ॥ त्येमाता ॥ ३ ॥ हर्षशामधेवासु उ ॥ विषुरेमरेक्षयं उ ॥ सुंवाराखोरेय
 केउं पाधेपैदूचे ॥ ४ ॥ श्रंघकोरटलिराति ॥ यनगलेनाकरिश्रंघविः मिषवर्षजबधारिं महा
 देवा ॥ ५ ॥ वरिविजुवरणकार ॥ शोलिउडतितकुवर ॥ मुमिदाटलकीकर ॥ कंसासुरोन इन
 वदिपलासदारवंदा ॥ कुलपात्रागवावजकटा ॥ अलेनालानवेकुंग ॥ उघडिलिकरोटु
 मगनिधानावसुदेव ॥ हृदरथोनकसेद्वायति ॥ रावलाइवो ॥ यसुनेनहिन ॥ ६ ॥ माथावा
 उनियासहश्रफलि ॥ त्राषनियापाउरपाणि ॥ जवयावभूवनि ॥ नंदेयशोदेवा ॥ ७ ॥ तेध
 हाटलेसजका ॥ पुरुषउठतानिकल्लोच ॥ ८ ॥ गजालभाकुल ॥ यादवनि ॥ ९ ॥ लयेतन
 दिकाबिंदि ॥ बाहटानिदाविलिधरति ॥ तदित्यानियावत्स्वाति ॥ श्रीकृष्णदेव ॥ १० ॥ मग
 करेनियाविस्मयो ॥ नदिउत्तरतावसुदेवो ॥ विगिंपावत्ताइवो ॥ नंदेयशोदेवा ॥ ११ ॥ नव
 लियशाकातिसि ॥ निद्राआलित्येक्षलि ॥ मगकृसेठविलापालयुनि ॥ येतलिकंसा ॥ १२ ॥

(J-A)

प्रगतोदवकिप्रति॥ आत्मापूर्वपहनि॥ कल्याशालिलिभगसमस्ति॥ ऐकिजातोहो १५॥ मगधाविनेदूल
 कंसाजाएविलिभातोदवकिप्रसवलिआपत्य॥ आठवागस्ती १६॥ प्रगतोलवउसवडि॥ कुरक्कबांधा
 नियांदुडि॥ कपोद्वेष्टुघडानश्रांगप्रेषेदि॥ प्रवेशाचातो॥ १७॥ तवेदरिलिसुंदरि॥ वाक्षाकिलेसश्रंष्ठरि
 सग्नरण्धरेनियांश्रंतरि॥ किरविजेन्द्रो॥ १८॥ उवेशालोवशिक्कवरि॥ तवेतेगलिकुमरि॥ उक्षिरा
 होनियांश्रंतरि॥ विलिलिकाहि॥ १९॥ अररेवंसासुरा॥ महानशश्रापविजा॥ तुगेलार्सिरेनिश्चाचरा
 येणेनिपातको॥ २०॥ थानक्कपाविजफल॥ ते॥ तुजहो नेनिष्क्र॥ जेनिकोकिक्कबांधेमाक् मौक्षप
 दायि॥ २१॥ तेसेदुनजालेरअसुरा॥ वायाविजाविजेवथुबरां॥ तारिकेविंश्चस्त्रहक् लुटनिले २२॥
 तरिक्षसज्जोश्रंतक॥ तोश्रालिकेठरंश्रैसवाल्ल॥ गथाजाल्लासिधानक॥ सावियाका २३॥ रेसि
 बोगेनियांसारति॥ मगगेलिश्चकि॥ महोत्तेजाविदियि॥ पुण्याश्रयविसावि॥ २४॥ मगकेसवि
 नारिमनि॥ केतवलरकिनकेगगनवालि॥ वायाइखरिलिबहिलि॥ श्रालिवसुद्वतो २५॥ मा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com